

एड्स : रोगी की देखरेख सहयोग के आयाम

नव निशा

शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

सारांश

पिछले कुछ दशकों में दुनिया भर में एड्स के बढ़ते आंकड़ों के रूप में एक ऐसा खतरा हमारे सामने उपस्थित हुआ है जिसने समाज और मानव जाती के व्यवहार और चेतना में एक बहुत बड़ा परिवर्तन ला खड़ा किया है। इस बीमारी को लेकर समाज में अनेक प्रकार की भ्रांतियाँ और डर व्याप्त हैं। मुख्य बात यह है की इन भ्रांतियों और समाज में एड्स को लेकर फैले डर का निराकरण होने में बहुत समय लगेगा।

ऐसे डर के बीच अध्ययनकर्ताओं के द्वारा यह भी जानकारी दी गई है की यह बीमारी उतना भी बड़ा खतरा नहीं है जितना की इसे प्रचारित किया जाता रहा है। दूसरे शब्दों में कहे तो एड्स अब सामाजिक से ज्यादा एक राजनीतिक रोग बन चुका है।

एड्स: एक अवधार गा

एड्स (एक्वायर्ड इम्म्यूनो डेफिश्यंसी सिंड्रोम) एक ऐसी बीमारी है जो की एक खास प्रतिरक्षा के विषाणु एच०आई०वी० (ह्यूमन इम्म्यूनो डेफिश्यंसी वाइरस) से फैलती है। यह विषाणु अत्यंत धातक^०और खत्स्नक होता है। यह मानव शरीर में उपस्थित रोग प्रतिरोधक प्रांगाली (शरीर की रोगों से लड़ने की शक्ति) को नष्ट कर देता है और शरीर में बिना^०कोई^०स्पष्ट लक्ष^०दर्शाये वर्षों तक रहता है। यह विषाणु अत्यंत छोटा होता है और सूक्ष्मदर्शी यंत्र द्वारा भी देखना कठिन होता है। एच०आई०वी० के विषाणु अनेक प्रकार से दूसरे व्यक्तियों के शरीर में प्रवेश कर सकते हैं। एड्स एच०आई०वी० के संक्रमा की अंतिम स्थिति होती है। एक स्वस्थ मानव शरीर को एच०आई०वी० से संक्रमित होने के बाद एड्स विकसित होने के लिए आठ से दस वर्ष का समय लगता है। निराशाजनक बिन्दु यह है की एड्स के इलाज के लिए अभी तक कोई टीका या दवा नहीं खोजा जा सका है। यह कहना अधिक अच्छा होगा की अभी तक इस बीमारी से बचने का कोई भी कारगर उपाय हमरे पास नहीं है। जुलाई 1996 में, एक अमरीकी वैज्ञानिक ने यह दावा किया था कि

एड्स का निदान संभव है। उनके द्वारा बताया गया निदान 'कांबिनेशन थेरेपी' पर आधारित है जिसकी कीमत 25,000 अमरीकी डालर बताई गई है। वर्ष 1980 के दशक में अमेरिका, फ्रांस, युगांडा, बेल्जियम, तंजानिया, जिम्बाब्वे आदि देशों में एड्स का उदय हो चुका था। एड्स का सबसे पहला मामला जो प्रकाश में आया वह वर्ष 1959 में आया जो कि एक 45 वर्षीय अमरीकी व्यक्ति का था। यद्यपि इसके बारे में सबसे अधिक जानकारी वर्ष 1981 में कैलिफोर्निया में प्राप्त हुई।

हालांकि एच०आई०वी० संक्रमा का प्रथम मामला भारत में मई 1986 में मद्रास, चेन्नई में प्रकाश में आया था। वर्ष 1987 में पुरों के राष्ट्रिय जीवाणु विज्ञान संस्थान और वेल्सेन के क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज ने दिल्ली के भारतीय चिकित्सालय अनुसंधान परिषद के एड्स टास्क फोर्स कि सिफारिश पर सूक्ष्म सक्रिय विश्लेषा आरंभ किए। इस विश्लेषा में 3027 व्यक्तियों कि सूक्ष्म जांच कि गई और अच्छी संख्या में लोगों का एच०आई०वी० पॉजिटिव होना पाया गया।

एड्स: बीमारी के प्रमुख लक्षण

किसी भी व्यक्ति के एच0आई0वी0 पॉजिटिव हिने का तब तक पता नहीं चलता है जब तक कि उसके रक्त का एलिसा टेस्ट या फिर टैस्टर्न ब्लाट टेस्ट न करवाया जाए। एड्स के रोगी में आमतौर पर कुछ लक्षण जैसे सिर दुखना, शरीर पर गाँठे होना, भूख का न लगना, वजन घटना, खांसी आना, मुँह में छाले होना, अधिक पसीना आना, घबराहट होना, दस्त या फिर पेट दर्द होना, बुखार लगना या फिर बुखार का एक माह से अधिक समय तक रहना, त्वचा के सामान्य रोग होना और अधिक समय तक बने रहना,

खुजली तथा घावों के अधिक समय तक नहीं बने रहने कि स्थिति में हरपीज रोग कि लगातार वृद्धि और लसिका ग्रंथियों में सूजन इत्यादि दिखाई दे सकते हैं। जब कोई व्यक्ति एड्स से ग्रसित हो जाता है तो उसके शरीर में रक्त कि सफेद और लाल कोशिकाएं टूटने लगती हैं। हम सभी जानते हैं कि सफेद रक्त कोशिकाएं प्रायः शरीर कि रक्षा के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता का निर्माण करती हैं। परंतु एड्स के विषाङ्ग जब मानव शरीर में प्रवेश कर जाते हैं तो ये विषाङ्ग रक्त कोशिकाओं को नष्ट कर देते हैं। सफेद रक्त कोशिकाओं कि जगह रक्त में छड़स के विषाङ्ग बढ़ते जाते हैं। अंत में शरीर कि प्रतिरक्षा प्रणाली कमज़ोर हो जाते हैं और व्यक्ति एड्स से ग्रसित हो जाता है।

एच0आई0वी0 विषाङ्ग : विषाङ्ग संचरण के स्त्रोत और अत्यधिक जोखिम वाले समूह

एड्स के बारे में जो सबसे बड़ी भ्रांति समाज में फैली है वह यह है कि एड्स एक छूत कि बीमारी है। इस कारण से समाज में एड्स के मरीजों को अनुकूल प्रकार कि परेशानियों का सामना करना पड़ता है

यहा ताकि कि उनका सामाजिक बहिष्कार भी कर दिया जाता है।

एच0आई0वी0 असल में छूत कि बीमारी नहीं है जो कि छूने से या संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से फैलती है। जैसे कि चेचक, टी0बी0, प्लेग, खसरा, हैंजा ऐसी बीमारियाँ हैं जो कि छूने से या संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से फैलती हैं। परंतु एड्स मुख्यतः यौन रस्तों और रक्त के संक्रमित होने से फैलती है। यह कहना सही होगा कि एच0आई0वी0 मुख्यतः चार स्त्रोतों से फैलता है:

1. संक्रमित व्यक्ति से यौन संबंध
2. एच0आई0वी0 संक्रमित रक्त या रक्टिया उत्पादों के शरीर के भीतर प्रवेश करने से
3. संक्रमित सुई अथवा सिरिजों से दवा चढ़ाने से
4. संक्रमित माँ से गर्भरथ शिशु में

प्रत्येक बच्चे के जन्म पर 30: से 50: अवसर संचार के होते हैं। एक अध्ययन में यह भी पाया गया है कि एड्स के 80: मामले यौनाचार से, 5: मामले संक्रमित रक्त के चढ़ाने से और 7: मामले संक्रमित सुइयों के इस्तेमाल से हुए थे। इस बात कि पुष्टि नेको द्वारा किए गए एक अध्ययन रिपोर्ट में भी कि गई है। अतः

यह एक मिथक ही है कि एच०आई०वी० संक्रमा मच्छर के काटने से, एक दूसरे को चूमने, पकड़ने अथवा आलिंगन करने से, हाथ मिलने से, छीकने या थूकने से, सार्वजनिक प्रसाधनों के प्रयोग करने से, एक ही प्लेट से खाने से, तर ताल से, एक ही स्कूल अथवा कम के स्थान मे जाने से, कपड़ों अथवा चादर के इस्तेमाल से फैलता है। अभी तक कि भी डॉक्टर, नर्स अथवा स्वास्थ्यकर्मी के एच०आई०वी० अथवा एड्स के रोगियों के संपर्क मे आने से संक्रमित होने कि रिपोर्ट कहीं से भी नहीं मिली है।

भारतीय स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार घरेलू महिलाएं एच०आई०वी० संक्रामा को फैलाने के लिए अधिक संवेदनशील होती हैं। वर्ष 1994 में मुंबई के वाडिया अस्पताल के सहयोग से भारतीय स्वास्थ्य संगठन द्वारा 25000 मध्यमवर्गीय भारतीय महिलाओं कि सूक्ष्म जांच का एक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में 210 महिलाओं में एच०आई०वी० विषा^ए परीक्षा^ए के बाद धनात्मक पाया गया। इसके अलाव लगभग 90^ए महिलाओं के पति भी एच०आई०वी० संक्रमित पाये गए। यद्यपि विवाहित महलाओं कि

एच०आई०वी० संक्रमित होने कि जोखिम बहुत निम्न स्तर कि पाई गई फिर भी उनके जोखिम भरा व्यवहार उनके लिए अधिक संवेदनशील था। एच०आई०वी० संक्रमित 90: युगलों में यह पाया गया कि पति विवाहोत्तर यौन संबंधों के कारण एच०आई०वी० से संक्रमित हुआ था। इसमे कोई आश्चर्य कि बातुं नहीं है कि एच०आई०वी० धनात्मक होने के परीक्षा^ए के बाद अनेक महिलाओं ने बचाव के उपायों अथवा नसबंदी को अपनाया।

एच०आई०वी० विषा^ए: संचरण के प्रमुख स्त्रोतों का विश्लेषा

एच०आई०वी० विषा^ए के संचरण के प्रमुख स्त्रोतों मे वेश्याओं, समलैंगिकों नसों में नशीली सुइयों के इस्तेमाल करने वाले, रक्तदान करने वाले, और निदानिय परिक्षा प्रयोगशालाओं और एच०आई०वी० कुंप्रस से युक्त बच्चों को जन्म देने वाली माताएँ मुख्य हैं। यहां पर इन सभी स्त्रोतों का विश्लेषा हम कर रहे हैं।

वेश्याएँ :

वेश्याएँ और कालगर्ल्स यौन प्लेचने के लिए विख्यात हैं। इन मे से अधिकतम् एच०आई०वी० संक्रमित हैं और इस कारण से इनके ग्राहकों में भी संक्रामा फैलता रहता है। एक अध्ययन के अनुसार 1989 से 1991 तक के केवल तीन वर्षों मे ही मुंबई मे 30: वेश्याओं को एच०आई०वी० से संक्रमित पाया गया। एक समीक्षा यह भी है कि वेश्याओं मे संक्रमा से स्वयं प्रभावित होने का प्रतिशत अधिक है और उनके ग्राहकों मे एच०आई०वी० संक्रमा के फैलने का प्रतिशत कम है। इस कारण वेश्याओं में एड्स निरोधक कार्यक्रमों को प्रचारित करने के साथ उनके ग्राहकों कि ओर भी ध्यान देना अत्यधिक आवश्यक है।

समलैंगिक संबंध:

यह एक सत्य है कि भारत मे समलैंगिककता को हेय दृष्टि से देखा जाता है। परंतु एक सत्य यह भी है कि कुछ संस्थाये ऐसी भी हैं जो कि समलैंगिककता और समलैंगिक लोगो के प्रति उदार रवैया और समाज के बदलते दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। 'मुंबई दोस्त' ऐसे ही खुशमिजाज लोगो कि एक संस्था है। यद्यपि समलैंगिककता आईपीसी के तहत अभी भी एक अपराध है। लेकिन अब इसके विषय में चली आ रही सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ा जा रहा है। वर्ष 1994 में तिहार जेल मे कोंडोमों के

वितर T कि घटना गंभीर चर्चा छा विषय है। इसलिए यह कहना उचित होगा कि समलैंगिकता के माध्यम से फैलने वाले एच0आई0वी0 का संक्रमण समाज के लिए घातक हैं कि लतः

मादक पदार्थों का उपयोग समाज के हर एक वर्ग मे तेजी से अपनी जड़े जमाता जा रहा है। जो लोग सुइयों अथवा इंजेक्शन के द्वारा मादक पदार्थ लेते हैं वह सुइयों के द्वारा एच0आई0वी0 संक्रमण के फैलने कि अधिक संभावना उत्पन्न करते हैं। यह नशेड़ी एक समय मे इतने अभ्यस्त हो जाते हैं की वे स्वयं को नशे का इंजेक्शन लगाना प्रारम्भ कर देते हैं। अधिकांशतः एक ही इंजेक्शन का प्रयोग कई लोगों के द्वारा किया जाता है।

रक्तदान दाता:

एक अनुमान के अनुसार भारत में 1020 रक्त बैंक हैं जो कि प्रति वर्ष लगभग 20 लाख रक्त कि बोतलों कि आपूर्ति करते हैं। इनमें से कुछ के पास लाइसेन्स है और कुछ बिना लाइसेन्स के हैं। इसके अलावे कुछ पेशेवर रक्त दाता भी हैं जो एच0आई0वी0 संक्रमित हैं। जब ऐसे रक्त दाताओं का रक्त बिना परीक्षा T के

रोगियों को चढ़ाया जाता है तो अनजाने में ही एच0आई0वी0 का संक्रमण दूसरे व्यक्तियों में फैल जाता है।

इसी तरह नैदानिक प्रोयगशालाएँ जब बिना वैज्ञानिक परीक्षा T के रक्त कि आपूर्ति करती हैं तो एच0आई0वी0 संक्रमण का फैलाव होता है।

गर्भवती महिलाएँ:

जिन गर्भवती महिलाओं मे एच0आई0वी0 धनात्मक होता है उनके शिशुओं में संक्रमण T के फैलने कि प्रबल संभावना होती है और उनके बच्चों मे जन्मजात एच0आई0वी0 धनात्मक पाया जाता है। एक आओर लगभग 65% महिलाओं में रक्त कि कमी होती है और उन्हें रक्त चढ़ाने कि आवश्यकता होती है। दूसरी ओर वेश्याएँ होती हैं जो हर वर्ष 50 लाख बच्चों को जन्म देती हैं। इसलिए वे दो प्रकार से एच0आई0वी0 संक्रमा के फैलाने के लिए संवेदनशील होती हैं।

अच्छी बात यह है कि अब कुछ दवाओं के माध्यम से गर्भवती महिलाओं में इसके रोक थाम का उपाय संभव है जो कि 90% तक गर्भवती माँ से उसके बच्चे मे एच0आई0वी0 के संक्रमा को फैलने से रोकता है।